अमर उजाला

बरेली
बृहस्पतिवार, 8 सितंबर 2022
भाद्रपद शुक्ल-त्रयोदशी
विक्रम संवत-2079

मधुमेह, हाई बीपी और अस्थमा पीड़ित भी कर सकते हैं नेत्र दान

मरने के बाद भी दुनिया देखेंगी आपकी आंखें

सौ से ज्यादा कोर्निया ट्रांसप्लांट कर चुका है एसआरएमएस नेत्र बैंक

- 25 अगस्त से 8 सितंबर तक मनाया जाएगा नेत्रदान पखवाड़ा
- ईश्वर की नियामत आंखों को अपने साथ न ले जाएं, दान करें
- आपकी आंखें दूसरों के जीवन में रोशनी भरने में आएंगी काम

SRMS
डॉ. नीलिमा मेहरोत्रा
डायरेक्टर
SRMS आई बैंक

बरेली: राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा प्रति वर्ष 25 अगस्त से 8 सितंबर तक मनाया जाता है। इस दौरान लोगों को नेत्रदान के महत्व के बारे में जानकारी दी जाती है कि कैसे मृत्यु के बाद अपनी आंखें दान की जाती हैं। जिससे मरने के बाद भी आपकी आंखे दुनिया देख सकें। यह बात एसआरएमएस मेडिकल कालेज के आप्थैल्मोलाजी विभाग की एचओडी डा.नीलिमा मेहरोत्रा ने कही। वर्ष 2002 में एसआरएमएस में स्थापित नेत्र बैंक लोगों की अंधकारमय जिंदगी में रोशनी के रंग भरने का काम कर रहा है। यहां अब तक सौ से ज्यादा कार्निया ट्रांसप्लांट हो चुके हैं। कोविड महामारी की प्रोटोकाल से पिछले डेढ़ वर्ष से नेत्रदान करने वालों की संख्या और कार्निया ट्रांसप्लांट न के बराबर हुआ है। हालांकि नेत्रदान जागरूकता के चलते पिछले इसी माह एक सप्ताह में छह सौ से ज्यादा लोगों ने नेत्रदान करने का शपथ पत्र भर कर नेत्रबैंक को दिया है। डा. मेहरोत्रा ने कहा कि मोतियाबिंद, ग्लूकोमा और कार्निया की बीमारियां दृष्टिहीनता की प्रमुख वजह हैं। स्मार्ट फोन का ज्यादा इस्तेमाल भी एक नई वजह बन कर सामने आ रहा है। ज्यादातर मामलों में दृष्टि की हानि को 'नेत्रदान' से ठीक किया जा सकता है। कार्निया के कारण दृष्टिहीन व्यक्ति हुआ कार्निया प्रत्यारोपण से ठीक हो सकता हैं। लोगों को नेत्रदान के प्रति ज्यादा से ज्यादा जागरूक करना ही पखवाड़े का मकसद है। आप भी इस दौरान नेत्रदान के लिए संकल्प लें। और अपने आसपास लोगों को इसे करने के लिए प्रेरित करें। जिससे अंधकारमय जीवन बिताने वाले लोगों की आंखों में रोशनी आ सके। कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी उम्र, लिंग, रक्त समूह और धर्म का हो, नेत्रदान कर सकता है। लैंस या चश्मे का उपयोग करने वाले व्यक्ति और जिनकी आंखों की सर्जरी हुई हो वो भी नेत्रदान कर सकते हैं। कमजोर दृष्टि नेत्रदान में बाधा नहीं है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप या अस्थमा से पीड़ित रोगी भी अपनी आंखें दान कर सकते हैं। मोतियाबिंद से पीड़ित रोगी भी अपनी आंखें दान कर सकते हैं। डा. मेहरोत्रा के अनुसार मृत्यु के चार घंटे के भीतर नेत्रदान ज्यादा बेहतर है। लेकिन फिर भी छह से आठ घंटे तक कार्निया नेत्रदान के लिए सही होती है। इस अवधि तक नेत्रदान हो सकता है। इसके लिए आप एसआरएमएस आईबैंक में संपर्क कर सकते हैं।

Advt.

श्री राम मूर्ति स्मारक अस्पताल, भोजीपुरा, बरेली

नेत्रदान हेतु सम्पर्क करें: 0581-2582000, टोल फ्री नं.: 1919